6 गंगा स्तुति

बड़-सुख सार पाओल तुअ तीरे।
छोड़इत निकट नयन बह नीरे।।

कर जोरि विनमओं विमल तरंगे।
पुन दरसन होए, पुनमति गंगे।।

एक अपराध छेमब मोर जानी।
परसल माय पाय तुअ पानी।।

कि करब जप-तप जोग धेयाने।
जनम कृतारथ एकहि सनाने।।

भनई विद्यापति समदओं तोही।
अन्तकाल जनु विसरहु मोही।।

-विद्यापति

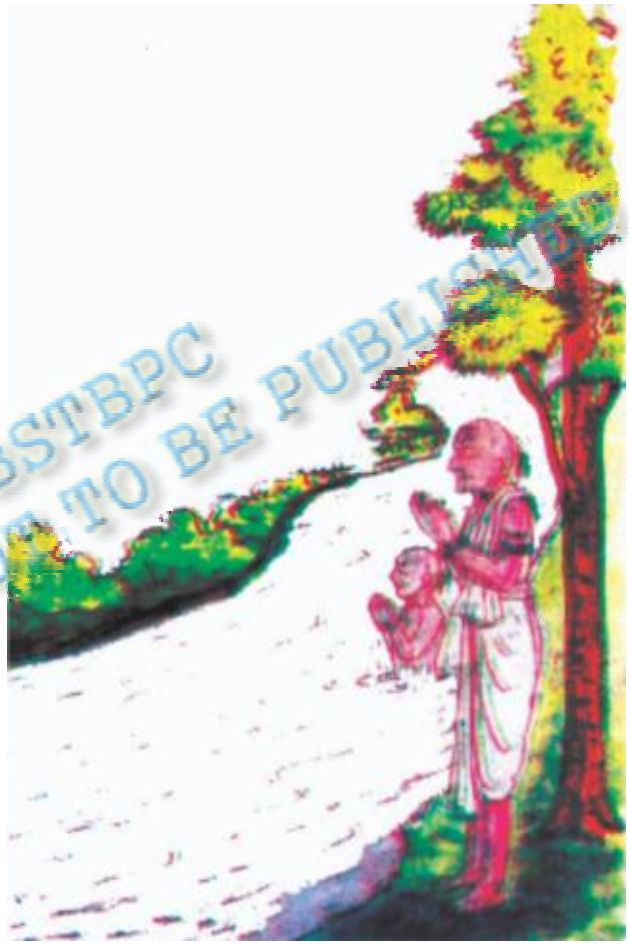

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

शब्दार्थ

दरसन-दर्शन **सनाने**-स्नान करना **छेमब**- क्षमा करना **विमल**-पवित्र
भनई- कहते हैं **पुनमति**-बार-बार **समदओं**-प्रार्थना करना **परसल**-स्पर्श, छूना ।

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. 'गंगा-स्तुति' कविता के कवि कौन हैं?
2. गंगा के किनारे को छोड़ते समय कवि की आँखों से आँसू क्यों बह रहे थे?
3. कवि गंगा से किस अपराध की क्षमा माँगता है?
4. **कविता की निम्नलिखित पंक्तियों को पूरा कीजिए**

    (क) कि करब जप-तप जोग धेयाने
    ....

    (ख) ....
    अंत काल जनु बिसरहु मोही।

पाठ से आगे

1. इस पाठ का शीर्षक "गंगा-स्तुति" रखा गया है। आप इस शीर्षक से सहमत हैं या असहमत? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।
2. गंगा के अतिरिक्त अन्य नदियाँ भी हमारे जीवन के लिए उपयोगी हैं। इन नदियों का हमारे दैनिक जीवन में क्या महत्व है, उल्लेख कीजिए।

व्याकरण

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्याय लिखिए

    (क) पाओल.............................
    (ख) छोड़इत.............................
    (ग) समदओं.............................
    (घ) समाने ....
    (ङ) पाय ....

गतिविधि

1. गंगा के उद्गम स्थल से उसके समुद्र में मिलने तक की यात्रा के प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण कीजिए।
2. गंगा के किनारे बसे शहरों की सूची बनाइए। इन शहरों में स्थित कल-कारखानों से गंगा नदी पर किस प्रकार का दुष्प्रभाव पड़ता है। इस पर अपने सहपाठियों से चर्चा कीजिए एवं लिखिए।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

Developed by: ABSOL www.absol.in